UP Board Solutions for Class 8 Sanskrit Chapter 6 किं ततं जानाति भवान्

किं ततं जानाति भवान्
(तुमुन् क्त-प्रत्ययो विधिलिङ्लकाग्एच)

विश्वविद्यालयस्य .... विहरतु ।
शब्दार्थाः-विहर्तुम् = घूमने के लिए, नावम् = नावे पर, आरूढः = बैठ गया, जलविहारम् = जलविहार, वीचीनाम् = तरङ्गों का, अम्भसाम् = जल की, अरित्रम् = पतवार, डाँड़, चतुर्थांशः = चौथाई भाग, व्यर्थतां गतः = व्यर्थ चला गया, ईदृशम् = ऐसा, मे = मेरा, कुतः = कहाँ से, नूनम् = निश्चय ही, अर्धाशः = आधा हिस्सा, व्यर्थतां नीतः = व्यर्थ कर दिया, अनुभवन् = अनुभव करता हुआ, प्रेषितः = भेजा गया, त्रयो भागाः-तीन भाग। अपार्थाः=व्यर्थ, नदे=नदी में, जलावर्तनम् = भंवर, जलप्लावनम् = बाढ़, अकम्पत = डगमगाने लगा, पश्यतः = देखते-देखते, जलेन = जल से, पूरिता = भर गई, सम्मे ण = घबराहट के साथ, तर्तुम् = तैरने के लिए, भीतः = डरा हुआ, तीर्वा = तैरकर, प्रयामि = जाता हूँ, खलु = निश्चय ही, बिहरतु = विहार करें, स्वपृष्ठमारोप्य = अपनी पीठ की सहायता से।

हिन्दी अनुवाद-विश्वविद्यालय का कोई प्राध्यापक घूमने के लिए नाव में बैठ गया। नाव में जलविहार करने का यह उसका प्रथम अवसर था। बालसूर्य की किरणों में जलक्रीड़ा, तरंगों का नृत्य, जल की अपार राशि, नाव के डाँड़ से नाव को आगे बढ़ना इत्यादि दृश्य देखकर उसने नाविक से इस प्रकार पूछा

प्राध्यापक-अरे नाविक! क्या तुमने कभी गणित पढ़ा है? ”
नाविक-नहीं पढ़ा।
प्राध्यापक-क्या गणित पढ्ने विद्यालय नहीं गए? निश्चय ही तुम्हारे जीवन का चौथाई भाग व्यर्थ गया। तुमने रसासन शास्त्र या भौतिक शास्त्र पढ़ा है।
नाविक-ये मेरे भाग्य में कहाँ कि मैं रसायन शास्त्र और भौतिक शास्त्र पढ़ता! ”
प्राध्यापक-अवश्य ही तुमने जीवन का आधा भाग व्यर्थ गुजार दिया। बताओ, तुपेने अंग्रेजी भाषा पढ़ी है?
नाविक-(ग्लानि अनुभव करके), महाशय! मेरे माता-पिता ने मुझे विद्यालय नहीं भेजा। कैसे पढ़ता?
प्राध्यापक-तब तुम्हारे जीवन के तीन हिस्से व्यर्थ हो गए। इसके बाद नदी में बाढ़ आ गई। लहरों। के वेग से नौका डगमगाई। देखते-देखते उनकी नौका जल से भर गई। नाविक ने घबराहट के साथ पूछा, “महाशय क्या आप तैरना जानते हैं?” प्राध्यापक जल का वेग देख डर कर बोला, “मैं तैरना नहीं जानता!” नाविक बोला- “यदि तैरना नहीं जानते. तो आपका सारा जीवन बेकार गया। मैं तो तैरकर नदी पार कर जाता हूँ। किन्तु यदि आप बुरा न मानें तो मैं आपको अपनी पीठ पर चढ़ाकर पार जाना चाहता हूँ।”

https://www.evidyarthi.in/